इकाई 12 मानवविज्ञान में क्षेत्रीयकार्य परंपराएं

इकाई की रूपरेखा

12.0 परिचय

12.1 आर्म–चेयर मानव विज्ञान की आलोचना

12.2 फील्डवर्क का महत्त्व

12.3 फील्डवर्क का इतिहास

12.4 अल्फ्रेड रेजिनाल्ड रेडक्लिफ–ब्राउन और ब्रॉनिस्लाव कास्पर मेलिनोव्स्की का योगदान

12.5 फील्डवर्क में नैतिकता

12.6 सारांश

12.7 संदर्भ

12.8 आपकी प्रगति जाँच करने के लिए उत्तर

अधिगम का उद्देश्य

इस इकाई के द्वारा आप निम्न बातों को जान पाएँगे

- सामाजिक–सांस्कृतिक मानव विज्ञान में क्षेत्रीयकार्य की उत्पत्ति;
- सामाजिक–सांस्कृतिक मानव विज्ञान में फील्डवर्क परंपरा की प्रगति में ए.आर रेडक्लिफ–ब्राउन और ब्रोनिस्लाव कॉस्पर मेलिनोवस्की का योगदान;
- इक्कीसवीं सदी में क्षेत्र (फील्ड) की अवधारणा कैसे बदल गई है;
- प्रारंभिक बीसवीं सदी का भारत।

12.0 परिचय

मानव विज्ञान एक अवलोकन, तुलनात्मक और सामान्यीकरण का विज्ञान है। इस कथन को हम सामान्य अर्थों में निम्नांकित रूप में समझ सकते है। (1) इसमें एक छोटी इकाई पर अवलोकन की तकनीकों का प्रयोग करके तथ्य(डेटा) एकत्र किया जाता है (जैसे कि एक समाज, समुदाय, पड़ोस, समूह या एक संस्था) (2) इस अध्ययन में पूरे समाज के बारे में कथन अमूर्त है, सामाजिक मानव विज्ञान को समाज के एक प्रेरक विज्ञान के रूप में समझा जाता है, जहाँ हम विशेष से सामान्य की ओर बढ़ते हैं। (3)इसके अतिरिक्त विभिन्न समाजों के आंकड़ों को अलग–अलग समाजों या उन इकाइयों के बीच समानता और अंतर का पता लगाने के लिए तुलनात्मक रूप से प्रयोग किया जाता है और (4)अध्ययन की इकाई के बारे में सामान्यीकरण की स्थिति पर पहुँचने का प्रयास किया जाता है।

योगदानकर्त्ता : प्रोफेसर. विनय कुमार श्रीवास्तव द्वारा संपादित पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय. वर्तमान निर्देशक, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण।
डॉ. रूखशाना जमान, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली।

एक समय पर तुलनात्मक अध्ययन से लिए गए इन सामान्यीकरणों को 'कानून' कहा जाता था (वह एक 'समान के कामकाज के नियम')। आज 'कानून' शब्द को मुख्य रूप से छोड़ दिया गया है क्योंकि यह महसूस किया जाता है कि प्राकृतिक और जैविक विज्ञान की भांति समाजविज्ञान में इस तरह के कानूनों को प्राप्त करना संभव नहीं है। मानव व्यवहार में प्राकृतिक और जैविक घटनाओं में जो पाया जाता है उसकी तुलना में परिवर्तनशीलता का एक बड़ा मसौदा है। हालाँकि, अध्ययन के अंतर्गत 'सभी इकाइयों के लिए सामान्य पहुंच है' पर पहुँचने का विचार जारी है। इस इकाई में हम फील्डवर्क अध्ययन और मानव विज्ञान अनुशासन में इसकी आवश्यकता के बारे में अध्ययन करेंगे। आर्मचेयर मानवविज्ञान से हम किस प्रकार क्षेत्रीयकार्य (फील्डवर्क) में चले गए, जहाँ दिन–प्रतिदिन मानव की गतिविधियों को देखा जाता है और फील्डवर्क के माध्यम से रिकार्ड किया जाता है,यह सब इस इकाई का हिस्सा होगा। हम यह भी ध्यान में रखेंगे कि 21वीं सदी में फील्डवर्क और 'फील्ड' की अवधारणा को कैसे समझा जाता है और एक मानव विज्ञानी को किन नैतिक चिंताओं का सामना करना होता है।

12.1 आर्मचेयर मानव विज्ञान की आलोचना

मानवविज्ञान के आरंभिक युग में हमारे विद्वानों ने स्वयं से कोई अनुभवजन्य अध्ययन नही किए बल्कि वे दूसरों द्वारा जैसे कि यात्री, मिशनरियों, सेना के जवान, फोटो–पत्रकार आदि से संकलित की गई सूचनाओं के आधार पर ही सामाजिक निष्कर्ष निकालते थे। जिसके कारण अक्सर इन्हें अप्रतिष्ठाजनक रूप से 'आर्मचेयर एंथ्रोपॉलजिस्ट' कहा जाता था। इसका मतलब यह था कि वास्तविकता का सामना करने के बजाए वे सिर्फ यह कल्पना कर रहे थे कि जो उन्होंने खोजा था वह तार्किक रूप से संभव है, या एक समय में संभव हो सकता है। और यह धारणा उन्होंने पक्षपाती, अंतिरंजित और पूर्वसूचित जानकारी के टुकड़ों को इकट्ठा करके अकुशल व्यक्तियों की सूचना के आधार पर निर्मित की गई थी। अक्सर उनका उद्देश्य पश्चिमी दुनिया को गैर–पश्चिमी लोगों की विषम और अजीबोगरीब प्रथाओं के अस्तित्व से चौकाना मात्र था।

एक बार 'आर्मचेयर एंथ्रोपॉलजी' परंपरा को खारिज किए जाने के बाद समाज में जो दृष्टिकोण सामने आया वह समक्ष अध्ययन (फ़र्स्ट–हैंड) था। इसका मतलब यह था कि मानव वैज्ञानिक केवल संग्रहकर्ता के रूप में थे इसके लिए न विश्लेषक और न ही सूचनाओं की व्याख्या करने वाले को एकत्र किया गया था।

इस प्रकार अब, मानव वैज्ञानिक अपना डेटा वास्तविक समाज से लेते हैं, लोगों के साथ उनके प्राकृतिक वास में रहते हुए जुटाये गए डेटा का विश्लेषण और व्याख्या करते हैं। जिससे कि समाज की संरचना और कार्य को समझ सके। हमें सच का ज्ञान अवश्य होना चाहिए–समाज कैसा है–इससे पहले कि हम उन बदलाव के बारे में सोचें जिन्हें पेश किए जाने की संभावना है। यह अतीत में देखा गया था कि परिवर्तन के कई कार्यक्रम और कई अभिनव परियोजनाएं (जिनमें से कई विश्वसनीय थे) लोगों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था क्योंकि, ये लोगों के रीति–रिवाजों और प्रथाओं के अनुरूप नहीं थे और उनके आकांक्षाओं को और माँगों को प्रतिबिंबित नहीं करते। इस प्रकार लोगों को प्रस्ताविक परिवर्तन ही शुरू किए गए थे जो उन समुदायों के लिए अंजान था और इसका परिणाम यह हुआ कि लोगों ने बिना किसी हिचकिचाहट के उसे खारिज कर दिया। कुछ मामलों में राज्य और परिवर्तन–उत्पादक एजेंसियों ने सोचा कि लोग परिवर्तन और दीर्घकालिक लाभों से अन्जान होने के कारण निष्क्रियता दिखाते है। वे परिवर्तन और नवाचारों को तभी स्वीकार करेंगे जब इन्हें जबरन लागू किया जाएगा। जिसका उन मानवविज्ञानिकों द्वारा कड़ा विरोध किया गया और बताया कि

परिवर्तन को इसलिए अस्वीकार कर दिया गया था क्योंकि उन्हें लोगों के सामाजिक जीवन, उनकी जरूरतों और आवश्यकताओं के ज्ञान के बिना पेश किया गया था। ऐसी स्थिति में किसी भी कार्यक्रम को लागू करने की अस्वीकारिता बढ़ जाती है।

अपनी प्रगति जाँचे

1. क्या आर्मचेयर मानवविज्ञानी ही फील्डवर्कर थे, यह कथन सही है या गलत?

.....

.....

.....

.....

12.2 क्षेत्रीयकार्य का महत्व

सामाजिक मानवविज्ञान के कार्य की पृष्ठभूमि में फील्डवर्क एक केंद्रीय कार्य के रूप में निर्मित हुआ। संयोग से यह न केवल सामाजिक मानवविज्ञान में अपना योगदान दे रहा बल्कि अन्य क्षेत्रों, प्राकृतिक एवं जैविक विज्ञान में भी फील्डवर्क एक ज्ञान पद्धति के रूप में संदर्भित है। आज अन्य विषयों ने अपने पाठ्यक्रमों में फील्डवर्क पर आधारित पाठ्यक्रम पेश किए हैं जिनमें कला, लोक और विज्ञान को सिखाया जा रहा हैं। जिसमें यह विधा मानवविज्ञानियों से फील्डवर्क के रूप में ली गई है।

हेनरी बर्गसन(1991) द्वारा किसी घटना को समझने के लिए दो तरीके बताते हैं, जिसमें पहला है कि घटना के इर्द–गिर्द रह के या फिर उस घटना के अंदर रह के। फील्डवर्क की कार्यप्रणाली यह मानती है कि किसी घटना को समझने के लिए उसके अंदर जाना जरूरी है, जिसे ''इनसाइडर्स व्यू'' कहा जाता है। फील्डवर्क एक डेटा संग्रह की विधि है, जिसमें अन्वेषक लोगों के साथ उनके प्राकृतिक वास में रहकर ,उस समाज का सदस्य बनकर सीखता है।

हमने यह अनुभव किया है कि आखिर क्या अंतर होता है जब हम कहते है 'लोग क्या सोचते है', 'लोग क्या कहते है', 'लोग क्या करते है' और 'वे क्या सोचते है जब वे कुछ करते है'। अगर हम केवल लोगों से इस बारे में प्रश्न करते है और उनके जवाब लिखते हैं जैसा कि 'सर्वे' में होता है, तब हम केवल उसी पर जानकारी हासिल करेंगे जो 'वह कहते हैं। क्या यह केवल सामान्य रूप से और सामाजिक रूप से वांछित उत्तर हैं। अन्य शब्दों में, जो वह कह रहे हैं, हो सकता है कि वह पूर्ण रूप से सत्य हो अथवा न भी हो। हमारे पास इस प्रकार के कई मामले रिकॉर्ड में दर्ज है। उदाहरण के लिए पॉल बोहानोन के बुनयोरो के अध्ययन में पाते है कि एक प्रतिवादी, पेशे से एक फार्मासिस्ट जिसे अपनी ईमानदारी पर बहुत घमंड है, वही इंसान अस्पताल से दवाइयाँ चुराकर एक मरीज को अवैध रूप से बेच रहा है। सच्चाई को जानने के लिए हमें काफी समय तक लोगों के साथ रहना होगा और उनके वास्तविक जीवन में झांकना होगा और यह देखना होगा कि सत्य क्या है, यह जो सामने खुद देख रहे हैं, या वह जैसे लोग बता रहे हैं, जो वास्तव में 'एक आदर्श तरीका है, बजाए उसके जो वह सोचते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें

2. क्षेत्रीयकार्य (फील्डवर्क) को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

12.3 फील्डवर्क का इतिहास

फील्डवर्क की कार्यप्रणाली अपने नियमों और प्रक्रियाओं के साथ समय के साथ विकसित हुई है। प्रारंभ में, जैसा कि हमने सीखा है कि पहले मानवविज्ञान क्षेत्र व्यापक उन्मुख नहीं था। 1859 में प्रजातियों की उत्पत्ति पर चार्ल्स डार्विन के प्रकाशन के बाद मानव विज्ञान का तेजी से विकास हुआ। मानवविज्ञानी अपनी शुरूआत से समाज और संस्कृति के विकास के अध्ययन के लिए प्रेरित हुआ, मानवविज्ञान ने पहला दृष्टिकोण विकासवाद के रूप में रखा था जिसे समाज के विकास के साथ माना जाता था। यह विभिन्न संस्थानो और उनके रूपों का उत्तर देता हैं जैसे कि ये संस्थान क्यों अस्तित्व में आए और वे कौन से चरण थे जिनके माध्यम से वे अपने समकालीन रूप तक पहुँचते हैं (विकास का क्रम) इत्यादि।

जैसा कि पहले बताया गया कि शुरुआती विद्वानों को बाद में मानवविज्ञानी के रूप में पहचान मिली, इन्हें पहले यात्रा वृतांतो और प्रशासनिक रिपोर्टों को उपलब्ध कराने तक ही माना गया था। यह जानकर थोड़ी हैरानी हो सकती है कि तथाकथित 'आदिम लोगों' के समुदाय और गैर–पश्चिमी दुनिया के समाजों पर लिखने से पहले वहां का दौरा भी करना चाहिए था। हालांकि, उनमें से कुछ (जैसे एडवर्ड टायलर, लुईस मॉर्गन) ने अपने अध्ययन क्षेत्रों का दौरा किया था। ब्रिटिश मानवविज्ञानी ई.बी.टायलर (1832–1917) ने मानव विकास (विकासवाद) के सिद्धांत पहलू के समर्थन में 1850 के मध्य में मैक्सिको में एक क्षेत्रीय अभियान में शौकिया पुरातत्विद की सहायता की। वर्ष 1861 में टायलर ने इस फील्डवर्क के आधार पर अपना पहला काम अनाहुआक या *मैक्सिको एंड मैक्सिकन; एंसेंट एंड मार्डन* प्रकाशित किया। अमेरिकी मानवविज्ञानी एल.एच. मॉर्गन (1818–1881), टायलर के समकालीन ने विकासवाद पर काम किया और हमें नातेदारी की अवधारणा प्रदान की। उन्होंने ईराक्विस समुदायो पर कानूनी मसलों पर काम करते हुए समुदाय के बारे में 1851 में *लीग ऑफ ईराक्विस* नामक पुस्तक में अपने नातेदारी संबंधी निष्कर्ष प्रकाशित किए।

दुनिया के अज्ञात हिस्सों की यात्रा चौदहवीं शताब्दी से शुरू हुई। समय बीतने के साथ यात्रा और सुविधा में सुधार के साथ इनके यात्राओं की संख्या में भी वृद्धि होने लगी, जिससे कई तरह के यात्रा वृत्तांत भी निर्मित हुए। पहले के मानवशास्त्रियों ने इन सामग्रियों को उत्पत्ति और विकास के सिद्धांतों के निर्माण के लिए ध्यान में रखा और प्रयोग भी किया था। दूसरे शब्दों में, उन्होंने इन समुदायों के बीच कोई प्रत्यक्ष अध्ययन नहीं किया था।

19वीं सदी के दूसरे भाग में संग्रहालय विकसित किए जा रहे थे, इन सभी संग्रहालयों में लोगों के नृवंशविज्ञान के लिए एक विभाग बनाया गया। आदिवासी क्षेत्रों में कई भ्रमण आयोजित किए गए ताकि उनकी सांस्कृतिक वस्तुओं को संग्रहालयों में रखा जा सके। इनका काम न केवल वस्तुओं को संग्रहालयों में रखना था बल्कि, उनके बारे में लिखना भी था। इस प्रकार संग्रहालय के सामग्री संकलन हेतु भ्रमण के साथ ही एक प्रकार से फील्डवर्क का अस्तित्व

सामने आया। ब्रिटिश मानवविज्ञानी जैसे, डब्ल्यू.एच.आर रिवर्स (1864) और ए.सी. हैडेन (1855–1940) ने ऑस्टेलिया और प्रशांत सागर के टोर्रस स्टेट में एक फील्ड अभियान शुरू किया जबकि अमेरिकी मानवविज्ञानी फ्रांज बोआस (1858–1942) ने कनाडा में बैफिन आइसलैंड के एसकीमोस(1883) पर फील्डवर्क शुरू किया।

19वीं सदी के करीब एक विकासवादी दृष्टिकोण सामने आ गया था जो कि पूरी तरह से यात्रा वृतांत के तथ्यों पर निर्भर है। इसीकारण से विकासवादी सिद्धांत की आलोचना की गई थी जिसका कारण केवल तथ्यों को एकत्र करने से नही था बल्कि ,यात्रा–वृत्तांतो पर अधिक निर्भरता भी थी। इसलिए सांस्कृतिक तथ्यों के बारे में नये डेटा एकत्र करने की आवश्यकता थी। विकासवादी सिद्धांत के साथ तब एक सामान्य असंतोष सामने आया जब यह दिखाया गया था कि आधुनिक समाजों के कई संस्थानों को भी सरल समाजों में भी पाया गया। उदाहरण के लिए, एकपतित्व विवाह और एकल परिवार सरल समाजों में भी पाए जाते थे। इसलिए, कोई यह कैसे कह सकता है कि ये संस्थाएं समय के साथ विकसित हुए थें, जैसा कि मॉर्गन ने माना जिसमें उन्होंने संकरता या सामूहिक विवाह को उदाहरण माना था।

इन सभी कारकों ने मानव विज्ञान के दृष्टिकोण में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव का नेतृत्व किया। बजाए यात्रा वृत्तांतो पर निर्भर होने के मानवविज्ञानियों ने स्वयं लोगों की संस्कृति का अध्ययन किया। फील्डवर्क के अस्तित्व में आते ही ये मानवविज्ञान के कार्यों की पहचान बन गया।

अपनी प्रगति जाँचें

3. उन मानववैज्ञानिक का नाम बताइए जिन्होंने एक शौकिया पुरातत्वविद् की सहायता उनके मेक्सिको के क्षेत्रीयकार्य में की थी।

   .....

   .....

   .....

4. सन् 1851 में ''लीग ऑफ दी ईराक्विस'' किसने लिखी थी

   .....

   .....

   .....

5. टोरेस स्र्टेट्स में फील्डवर्क करने वाले ब्रिटिश मानवविज्ञानी का नाम बताइए।

   .....

   .....

   .....

6. किस मानववैज्ञानिक ने एसकिमोस ऑफ बॉफिन आइलैंड ने कार्य किया था?

   .....

   .....

   .....

12.4 अल्फ्रेड रेजिनाल्ड रेडक्लिफ–ब्राउन और बोनिस्लाव कास्पर मेलिनोवस्की का योगदान

आरंभिक समय के प्रसिद्ध क्षेत्र अध्ययनों में से एक ए.आर.ब्राउन द्वारा अंडमान द्वीप समूह पर किया गया काम था। ब्राउन, जो बाद में रैडक्लिफ–ब्राउन बन गए, उन्होंने दो साल (1906–08 से) इन लोगों के साथ बिताए और 1910 में अपने मास्टर शोध प्रबंध को लिखा, जो उनके द्वारा एकत्र की गई जानकारी के आधार पर निर्मित किया गया था। यद्यपि यह काफी हद तक एक प्रकार्यात्मक अध्ययन था। कहने का तात्पर्य यह है कि अंडमानी समाज किस प्रकार समग्र था, इसके भी कई उदाहरण हैं, जिसमें लेखक ने देखा कि सांस्कृतिक लक्षण कैसे एक–दूसरे से अलग थे। दूसरे शब्दों में, ब्राउन का काम भी प्रसरणवाद से संबंधित था इसका कारण यह था कि वह डब्ल्यू.एच.आर. रिवर्स के विद्यार्थी थे जो अपने समय के प्रसिद्ध प्रसारकों में से एक थें। ब्राउन का फील्डवर्क अनुकरणीय नहीं था, लेकिन उन्होंने यह जरूर दिखाया कि विकासवादियों के पास लोगों के बारे में पूर्व सभी मान्यताओं को दूर करने के लिए समाज का पहला आवश्यक अध्ययन मौजूद था।

फील्डवर्क के व्यापक परिसर को निर्धारित करने में पोलिश मूल के एक प्रमुख विद्वान ब्रोनिस्लाव मोलिनोवस्की थे, जिन्होंने सी.जी.सिल्गिमैन के निर्देशन में मानवविज्ञान का अध्ययन किया। उन्होंने ट्रोब्रिएंड आइलैंडर्स के साथ गहन फील्डवर्क किया। अगस्त 1914 से मार्च 1915 तक ट्रोबिएंड पर लोगों के साथ इकतीस महीने का समय बिताया, फिर मई 1915 से मई 1916 तक, और फिर, अक्टूबर 1917 से अक्टूबर 1918 तक फील्डवर्क का आखिरी कार्यकाल पूरा किया। 1922 में उनकी प्रसिद्ध पुस्तक *आर्गोनॉट्स ऑफ द वेस्टर्न पैसफिक* प्रकाशित हुई जो जो ट्रोब्रिएंड समाज में विभिन्न प्रकार के आदान–प्रदान की प्रणाली का विश्लेषण प्रदान करती है।

मैलिनोवस्की लोगों के बीच में ही रहते थे, उन्होंने ओमारकाना गाँव में अपना शिविर बनाया और लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा सीखकर स्वंय से सारी जानकारी एकत्र कर ली। दूसरी ओर, ब्राउन ने मुख्य रूप से अनुवादकों और दुभाषियों की सहायता से अपना डेटा एकत्र किया। मालिनोवस्की ने अपने लेखन में हमेशा लोगों की स्थानीय भाषा सीखने के महत्व को बनाए रखा, क्योंकि लोगों की सांस्कृतिक अवधारणाओं को उनकी भाषा जाने बिना नहीं समझा जा सकता है। मालिनोवस्की के वर्णन में फील्डवर्क कैसे किया जाना चाहिए इसे निर्धारित करने का प्रयास किया गया। इस आधार पर उनके ट्रोब्रिएंड आइलैंडर्स के साथ किए गए फील्डवर्क के आधार पर कुछ निम्नलिखित सिद्धांतों को निर्मित करते हैं:

1. नृवंशविज्ञानी को लंबे समय तक एक ही तरह के व्यवहार का निरीक्षण करना चाहिए और समय के विभिन्न बिंदुओं पर होने वाली घटनाओं का भी अवलोकन करना चाहिए। उसे इसके एकान्त उदाहरणों पर भरोसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह विचित्र हो सकता है। इस नियम का उद्देश्य किसी भी विचित्र तत्व या सामाजिक क्रिया में स्वभावगत विशेषत पर शासन करना है। हमारा काम यह समझना है कि, समाज में एक विशेष प्रकार का व्यवहार विशिष्ट है, या अत्यधिक व्यक्तिगत है। हमारी रुचि व्यक्ति में नहीं है, लेकिन समुदाय के सामूहिक व्यवहार को समझने में है। इसीलिए एक ही प्रकार के व्यवहार को उन सभी विशेषताओं में मौजूद सामान्य विशेषताओं की खोज के लिए लंबे समय तक देखा जाना चाहिए। इसे मानव क्रिया का कंक्रीट, 'सांख्यिकीय दस्तावेज' कहा जाता है।

2. पश्चिमी दुनिया से आए शुरुआती यात्रीयों ने तथाकथित 'आदिम' क्षेत्र के लोगों में विषमताएं, अजीब रीति–रिवाजों और मान्यताओं के अध्ययन पर अपनी दृष्टि बनाई, जिनका उनकी संस्कृतियों में अभाव था। वे मुख्य रूप से इन लोगों और पश्चिमी लोगों के बीच मतभेदों की पहचान करने में रुचि रखते थे। इस प्रकार, यह स्पष्ट था कि उन्होंने लोगों के रोजमर्रा के जीवन पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। और 'चयनात्मक अध्ययन' के इस दृष्टिकोण के लिए यह तर्क दिया गया था कि हमें लोगों की रोजमर्रा जिंदगी का अध्ययन करना चाहिए जिसे आमतौर पर बिना प्रमाण के सत्य मान लिया जाता था। हमारा काम पूरे समाज का अध्ययन करना है, इसके विभिन्न हिस्सों के बीच का संबंध और जिस तरह से वे सभी मिलकर काम करते हैं ये सब। इसलिए जरूरी है कि इसके कुछ हिस्सों के बजाय इसकी संपूर्णता को जानना चाहिए, जो आगंतुकों के बीच रुचि को बढ़ाती हैं। सलाह यह है कि समाज के हर पहलू का अध्ययन किया जाए न कि केवल जो अजीब दिखाई देता है।

3. मोलिनोवस्की का कहना है कि नृवंशविज्ञानियों को गाँव के जितने करीब हो सके रहना चाहिए। जो वहाँ के स्थानीय लोग करते हैं, उनके रीति–रिवाज, समारोह में बार–बार भाग लेना चाहिए। कुछ ऐसी भी घटना है जिन्हें रिकॉर्ड नहीं किया जा सकता परंतु वहाँ रहकर उसका निरीक्षण किया जा सकता है। उदाहरण के लिए मेलिनोव्सकी ने अपनी सूची में यह भी लिखा है, 'लोगों की दिनचर्या' 'कामकाजी दिन' 'किस तरह वह अपने शरीर का ध्यान रखते है, कैसे खाना खाते है, और कैसे उसे बनाते है, कैसे लोग समाज में रहते हैं, इत्यादि। ये घटनाएं सामाजिक जीवन की सूक्ष्मता *'इंपोंडेराबिला ऑफ सोशल लाइफ'* को दिखाते है, जिसकी निरंतरता को सावधानीपूर्वक दर्ज करने की आवश्यकता है।

4. हमें उन सटीक शब्दों पर ध्यान देना चाहिए जिनमें लोग अपने भावनाओं, विचारों और विश्वासों का संचार करते हैं। इन नृवंशविज्ञान संबंधी कथनों, विशिष्ट आख्यानों, विशिष्ट उक्तियों, लोककथाओं की वस्तुओं और जादुई सूत्रों को समग्र रूप में दर्ज किया जाना चाहिए। इनका संग्रह यह बताता है कि मेलिनोवस्की एक 'कॉर्पस शिलालेख' कहते हैं, जो हमें लोगों की 'मानसिकता; की समझ के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है। प्रत्येक शब्द को सांस्कृतिक रूप से समझने और विश्लेषण करने की आवश्यकता है। जिसमें भाषा, संस्कृति का एक दर्पण है।

5. मानवशास्त्रीय अन्वेषण के उद्देश्यों पर मेलिनोवस्की (1922) कहते है, मूल दृष्टिकोण को समझिए, उनका जीवन के साथ संबंध, उनकी दुनिया की दृष्टि और लोगों का जीवन समझें"। प्रत्येक संस्कृति में मूल्यों का अपना सेट होता है, चीजों को करने का तरीका होता है, जो लोगों के जीवन को एक अलग अर्थ देता है, दूसरे शब्दों में, इससे लोगों के जीवन पर प्रत्येक संस्कृति की पकड़ अलग–अलग होती है। अगर हम बाहरी लोगों के हिसाब से देखें तो हम इसे कभी समझ नहीं पाएंगे, हमारे आदर्श बीच में आएंगे और हम एक पक्षपाती और पूर्वाग्रह दृश्य प्रदान करेंगे। इस प्रकार मानवविज्ञानियों को 'लोगों के मस्तिष्क' का 'आंतरिक' अध्ययन करना चाहिए ।

गतिविधि

अवलोकन के सार को समझने के लिए आप उदाहरणतः बस/मेट्रो/ट्रेन द्वारा यात्रा करते हुए लोगों को देखें, कि लोग एक दूसरे से कैसे बर्ताव करते हैं। कैसे एक दूसरे से बातचीत करते हैं, या नहीं करते है। लोग सार्वजनिक स्थानों पर फोन पर कैसे बात करते हैं। ऐसे विभिन्न प्रकार के व्यवहार को नोट करिए और टिप्पणी लिखिए।

मालिनोवस्की ने फील्डवर्क के बुनियादी क्षेत्र को निर्धारित किया है। लम्बे समय तक उन्होंने ट्रेनिंग दी है कि कैसे फील्डवर्क करना चाहिए। उनके शिष्यों ने उसी लंबे समय तक लोगों के बीच रहकर और उनकी मानसिक स्थिति समझकर धीरे–धीरे फील्डवर्क को आगे बढ़ाया। आज का मानवविज्ञान मालिनोवस्की के फील्डवर्क पर निर्धारित है। हालांकि, मालिनोवस्की ने 'पार्टीसिपेंट ऑवेजरवेशन' शब्द का प्रयोग नहीं किय था। उनका सारा अध्ययन लोगों के साथ उनकी दिनचर्या में सहभागिता करने और अधिक तथ्यों को एकत्र करने का था।

अपनी प्रगति जाँचें

7. ए.आर. रेडक्लिफ–ब्राउन ने कहाँ पर एक प्रसिद्ध फील्ड अध्ययन शुरू किया था?

   .....

   .....

   .....

8. मैलिनोवस्की के गुरू कौन थे?

   .....

   .....

   .....

9. 'स्थानीय भाषा को सीखना जरूरी नहीं है। बताईए कि यह बयान सही है या गलत?

   .....

   .....

   .....

12.5 21वीं सदी में फील्डवर्क

अभी तक हमने मानवविज्ञान के अध्ययन में फील्डवर्क की प्रासंगिकता और आवश्यकता पर चर्चा की। अब सवाल यह उठता है कि क्या हम अभी भी फील्डवर्क के पारंपरिक पैटर्न अपनाए हुए हैं या नहीं। समय के बदलाव के कारण मानवविज्ञान के फील्डवर्क में भी काफी बदलाव आए हैं। 'फील्ड' अब वो नहीं रहा जैसे पहले था, फील्ड अपने आप ही बहुत तेजी से बदल रहा है। वैश्वीकरण के इस समय में बहुत ही मुश्किल से कोई ऐसा समाज मिलेगा जो पूरी तरह अपनी संस्कृति के साथ संलिप्त हैं।

मानवविज्ञानी मुख्य रूप से कम ज्ञात समाजों के साथ संबंध रखते हैं, यद्यपि वे विकसित और विकासशील समाजों को भी ध्यान में रखते हैं। आज मानवविज्ञान में फील्डवर्क को न केवल

'दूसरों' के बल्कि 'स्वयं 'के अध्ययन के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि मानवविज्ञानी अब अपने जीवित अनुभवों के बारे में लिख रहे हैं। आज के परिदृश्य फील्ड में एक संस्था हो सकती है, जिसमें एक संगठन है। जिसमें मानवविज्ञानी, कार्य संस्कृति व्यवहार और पैटर्न के अध्ययन पर केंद्रित है। फील्ड, शहरी या ग्रामीण हो सकता है। औपनिवेशिक फील्डवर्कर्स के काम में उभरने वाले नैतिक मुद्दों के कारण स्वदेशी मानवविज्ञानियों ने अपने ही समाज का पुनर्अध्ययन करना चाहते हैं। इसलिए मानवविज्ञानी आज अपने ही लोगों के लिए काम कर रहे हैं। वर्चुअल स्पेस (आभासी स्थान) आज मानवविज्ञानियों के लिए प्रसंग का विषय है, क्योंकि मानवजाति अपनी गतिविधियों को ऑनलाइन ले जा रहा है। इसलिए वर्चुअल स्पेस भी अब मानवविज्ञानियों के लिए फील्ड बन गया है। फील्डवर्क बहु–पक्षीय भी हो सकता है। बहु–पक्षीय फील्डवर्क में, शोधकर्ता एक से अधिक साइट में फील्डवर्क करता है जहां विषय पाया जा सकता है। भारत में हिजड़ों पर सेरेना नंदा का काम बहु–पक्षीय फील्डवर्क का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जहां उन्होंने भारत के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले हिजड़ों को ध्यान में रखा। मानवशास्त्रीय फील्डवर्क में एक हालिया प्रवृत्ति 'स्व' पर अध्ययन कर रही है, जिसे ऑटोइथेनोग्राफी के रूप में जाना जाता है, जहां फील्डवर्कर अपने जीवन के अनुभवों को बताता है।

अपनी प्रगति जाँचें

10. कुछ 21वीं सदी के उन स्थानों का नाम बताईए जहाँ फील्डवर्क शुरू हुआ।

.....

.....

.....

12. ''फील्डवर्क'' आभासी स्थान में मुमकिन है, यह कथन सही है या गलत?

.....

.....

.....

12.6 फील्डवर्क में नैतिकता

कार्य के दौरान नैतिक सिद्धांत ही व्यक्ति के व्यवहार का पक्ष होता है। नैतिकता, मूल रूप से एक नैतिक सिद्धांत हैं, जो किसी गतिविधि के समय स्वयं और दूसरों के प्रति, व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करती हैं। मानवविज्ञानी, फील्डवर्क में मनुष्यों के साथ बातचीत शामिल होते है जहां कई बार शोधकर्ता को संवेदनशील डेटा या जानकारी को बांटना पड़ता है। इस प्रकार नैतिक मुद्दे, मानवविज्ञान क्षेत्र में एक प्रमुख चिंतन का विषय है। नैतिकता की समस्या एक लिखित रिपोर्ट या शोध विषय के चयन तक से शुरू हो सकती है। उदाहरण के लिए फील्ड में एक तस्वीर क्लिक करते समय यह एक नैतिक मुद्दे को भी जन्म दे सकता है कि इसमें शामिल व्यक्ति की सहमति ली गई थी या नहीं। फील्डवर्क जानकारी इकट्ठा करने के शोधकर्ताओं के तरीके का एक हिस्सा है और यह फील्डवर्क ही है जो एक तरह से लोगों के जीवन में घुसपैठ करता है। इस प्रकार, एक शोधकर्ता को बहुत परिश्रमी होना चाहिए कि डेटा को कैसे एकत्र किया जाए और उसका प्रसार किया जाए। क्षेत्र में शोधकर्ता को डेटा

संग्रह से संबंधित चार बुनियादी विशेषताओं की आवश्यकता होनी हैः (क) संवेदनशील मुद्दों की गोपनीयता जो संरक्षित करना, (ख) डेटा संग्रह को शुरू करने से पहले अध्ययन के तहत लोगों की सहमति (ग) समुदाय और समाज की बेहतरी के लिए डेटा के उपयोग की चिंता करना (घ) ज्ञान और उसका संचरण, जिसमें डेटा के प्रामाणिकता को बनाए रखते हुए अपने अध्ययन को स्वदेशी ज्ञान को पेटेंट के रूप में समुदाय के अधिकार में शमिल करना हैं।

अपनी प्रगति जाँचें

12. ''मानवविज्ञानियों को तस्वीर लेने या रिकार्डिंग करने से पहले सहमति लेनी होगी, यह कथन सही है या गलत?

.....

.....

.....

12.7 सारांश

मानवविज्ञान एक फील्ड पर आधारित विषय है। मानवविज्ञान की उप–अनुशासनों में सामाजिक/सांस्कृतिक अध्ययन को जानने के भिन्न तरीके मिले हैं जिसमें फील्डवर्क बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। मानवविज्ञान के शुरूआती अध्ययनों में आर्मचेयर–मानवविज्ञानियों ने दुनिया के कोने–कोने से यात्रियों के बताए आख्यानों को तथ्य माना था, जिन्हें विभिन्न् विद्वानों ने अपनी यात्रा के दौरान प्राप्त किया। विद्वानों ने उन सूचनाओं के आधार पर सिद्धांतों का निर्माण किया। धीरे–धीरे अधिक सूचानाओं का संग्रह हुआ और महसूस हुआ की अधिक सूचना इकट्ठा करना भी समाज में बदलाव लाने में सहायता कर सकता था। ए.आर. रेडक्लिफ ब्राउन और बी. मैलिनोवस्की द्वारा किए गए क्षेत्रीयकार्य ने समाज के भौतिक परिणामों तथा तथ्य संग्रह के तरीकों में बहुत हद तक परिवर्तन ला दिया। जिसने सामाजिक/सांस्कृतिक मानवविज्ञान में होने वाले अन्वेषण को प्रगतिशील बनाने में बहुत सहायता की।

अगली इकाई में हम फील्डवर्क कैसे करें सीखेगें, साथ ही फील्ड पर जाने से पहले हमें फील्डवर्क के लिए की जाने वाली तैयारी,आचरण, फील्डवर्क का संचालन और अंत में परिणामों को प्राप्त करना सीखेगें।

12.8 संदर्भ

बर्गसन, एच.एल. एंड पॉल, एम.एम (1991). "मैटर एंड मेमोरी, (अनु.)" एन. एम. पॉल एंड डब्ल्यू एस पालमर, न्यूयार्क : जार्ज एलन एंड अनविन.

बोहानन, पी. (संपा) (1960). *अफ्रीकन होमासाइड एंड सूसाइड*, प्रीन्सेटोन, न्यू जर्सीः प्रिन्सेटोन यूनिवर्सिटी प्रेस.

कोठारी–सी. आर. (2009). *रिसर्च मैथडोलॉजी*, नई दिल्लीः न्यू ऐज इंटरनेशनल पब्लिशर्स.

मलिनोस्की, वी (1922). *अर्गोनॉट्स ऑफ द वैस्टर्न पैसिफिकः एम एकाउंट ऑफ नेटिव एंटरप्राइज एंड एडवेंचर न्यू गुएना*, लंदनः रूटलेज एंड कीगन पॉल.

रेडक्लिफ–ब्राउन, ए.आर (1922). *द अंडमान आइलैंडर्सः ए स्टडी इन सोशल एंथ्रोपोलॉजी,* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

साधु, ए.एन. एंड सिंट, अमरजीत (1980). *रिसर्च मैथड्स इन सोशल साइंस,* बॉम्बेः हिमालय पब्लिशिंग हाउस.

12.9 आपकी प्रगति जांच के लिए उत्तर

1. गलत
2. देखें अनुभाग 12.2
3. ई. बी. टायलर
4. एल.एच. मॉर्गन
5. डब्ल्यू.एच.आर रिवर्स एंड ए.सी. हैडेन
6. फ्रांज बोएस
7. अंडमान आइलैंडर्स
8. सी.जी. सेलीगमन
9. गलत
10. 12.5 देखें
12. सही
12. सही